अव्यक्त पालना का रिटर्न

वरदानीमूर्त बनने के लिए दो दान

1 एक है - ज्ञान रत्नों का महादान।

2 दूसरा है - कमजोर आत्माओं प्रति अपने शुद्ध संकल्प व शुभ भावना द्वारा सर्वशक्तिवान से, प्राप्त हुई शक्तियों का वरदान।

16.01.77

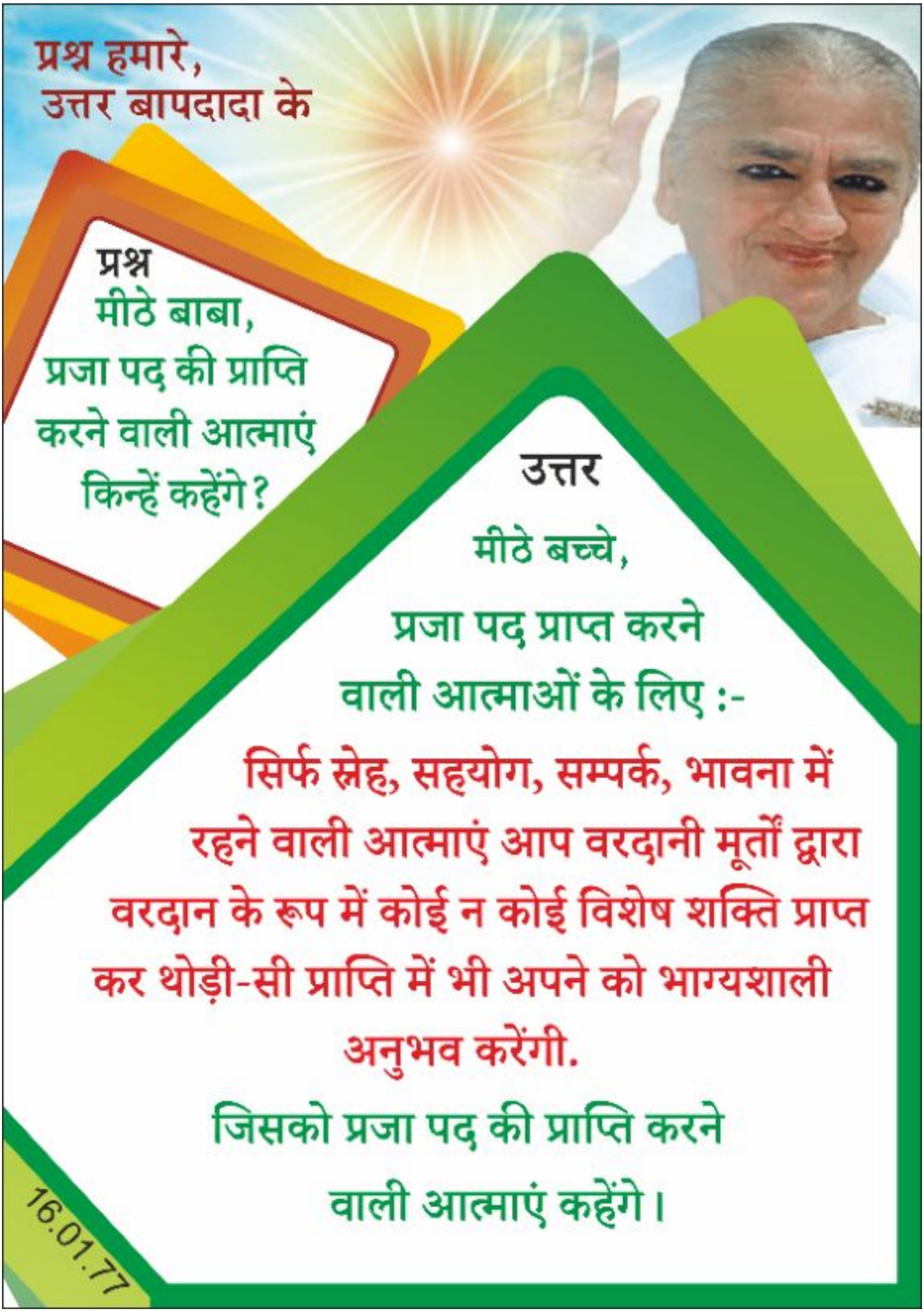

प्रश्न हमारे, उत्तर बापदादा के

प्रश्न

मीठे बाबा,
प्रजा पद की प्राप्ति करने वाली आत्माएं किन्हें कहेंगे?

उत्तर

मीठे बच्चे,
प्रजा पद प्राप्त करने वाली आत्माओं के लिए :-

सिर्फ स्नेह, सहयोग, सम्पर्क, भावना में रहने वाली आत्माएं आप वरदानी मूर्तों द्वारा वरदान के रूप में कोई न कोई विशेष शक्ति प्राप्त कर थोड़ी-सी प्राप्ति में भी अपने को भाग्यशाली अनुभव करेंगी.

जिसको प्रजा पद की प्राप्ति करने वाली आत्माएं कहेंगे।

16.01.77

मन की बात... बाप-दादा के साथ

मैं आत्मा :-

प्यारे बाबा,
वरदानी बनने के लिये क्या अटेंशन रखना है?

बाप-दादा :-

मीठे बच्चे,
वरदानीमूर्त बनने के लिये एक बात का अटेंशन रखना है :-

🌟 सदा स्वयं से और सर्व से संतुष्ट - संतुष्ट आत्मा ही अनेक आत्माओं का इष्ट बन सकती है व अष्ट देवता बन सकती है।

🌟 सबसे बड़े से बड़ा गुण कहो या दान कहो या विशेषता कहो या श्रेष्ठता कहो, वह संतुष्टता ही है।

🌟 संतुष्ट आत्मा ही प्रभु प्रिय, लोक प्रिय और स्वयं प्रिय होती है।

16.01.77

16-1-77
अव्यक्त वाणी का
मुख्य बिंदु

वरदानमूर्त

बाबा ने वरदानमूर्त
बनने के लिए
दो दान बताये

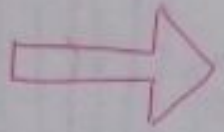

1) ज्ञान रत्नों का महादान

&

2) कमजोर आत्माओं प्रति अपने शुद्ध संकल्प व शुभ भावना द्वारा सर्वशक्तीवान से प्राप्त हुई शक्तीयों का वरदान

16-01-77 की अव्यक्त वाणी से स्वमान

मैं सन्तुष्ट आत्मा हूँ।

सन्तुष्ट आत्मा अर्थात् वरदानी स्वरूप साक्षात्कार मूर्त्त,
दर्शनीय मूर्त्त, सम्पन्न और समान मूर्त्त।
प्रभु प्रिय, लोक प्रिय और स्वयं प्रिय।

16-01-77

सन्तुष्ट आत्मा ही अनेक आत्माओं का इष्ट बन सकती है

→ शक्तियों को विशेष रूप में 'वरदानी' कह कर पुकारते हैं। तो अभी अन्त के समय में महादानी से भी ज्यादा, वरदानी रूप की सेवा होगी। → (1) ज्ञान रत्नों का महादान (2) कमज़ोर आत्माओं प्रति अपने शुद्ध संकल्प व शुभ भावना द्वारा सर्वशक्तिवान से प्राप्त हुई शक्तियों का वरदान।

→ ज्ञान-धन दान देने से आत्मा स्वयं भी ज्ञान स्वरूप बन जाती